Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 1, January-April, 2025. pp. 251-263)

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन (कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के विशेष संदर्भ में)

रोहित कुमार काण्डपाल[1]
नीरज तिवारी[2]
तरुण कुमार[3]
रुचि हरीश आर्या[4]

शोध सार

प्रस्तुत शोध–पत्र कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल से सम्बद्ध बी0एड0 महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता के मध्य अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन के रूप में चार बी0एड0 महाविद्यालयों का चयन किया गया है, जिसमें दो सरकारी तथा दो गैर सरकारी महाविद्यालय हैं। इन महाविद्यालयों में बी0एड0 प्रथम वर्ष तथा बी0एड0 द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं में से 100 प्रशिक्षणार्थिओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। जिसमें 50 सरकारी महाविद्यालयों से तथा 50 गैर सरकारी महाविद्यालयों से हैं, जो अलग–अलग संकायों (जैसे विज्ञान तथा कला संकाय) से हैं तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं।

---

[1] शोधार्थी, एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[2] सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[3] शोधार्थी, एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[4] विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय, हल्द्वानी शहर (नैनीताल)।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण एवं विश्लेषण विधि द्वारा आंकड़े प्राप्त कर बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण अभिक्षमता तथा भावनात्मक परिपक्वता के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिंदु– बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी, शिक्षण–अभिक्षमता, भावनात्मक परिपक्वता, सरकारी तथा गैर सरकारी महाविद्यालय।

प्रस्तावना

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।"

–नेल्सन मंडेला

एक शिक्षक का मुख्य उपकरण उसकी शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही वह अपने पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाता है तथा पाठ्यक्रम के द्वारा ही शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के बीच संबंध स्थापित होता है। शिक्षक विभिन्न शिक्षण कौशलों के माध्यम से पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों तक पहुंचाता है। शिक्षण एक कला है, जो अध्यापक को विद्यार्थियों में लोकप्रिय बनाती है। शिक्षण कौशल भी शिक्षक की योग्यता और रुचि पर आधारित होता है, जिसमें विभिन्न प्रशिक्षणों, संसाधनों और अनुभवों के द्वारा बढ़ोत्तरी कर सकते है।

वर्तमान में शिक्षण हेतु सहायक सामग्री के रूप में तकनीकी आधारित शिक्षण, कंप्यूटर आधारित सॉफ्टवेयर और उपकरण (सीएआई पैकेज), 3डी चित्र, एनिमेटेड चित्र, एआई टूल्स आदि के माध्यम से विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को सरल और रोचक बनाया जा रहा है। पढ़ाते समय शिक्षक को अपनी शारीरिक भाषा एवं चेहरे के हाव–भाव का उपयोग करना पड़ता है, जिसके लिए उसे अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से प्रदर्शित करना होता है। भावनाओं के बेहतर प्रदर्शन के लिए शिक्षक का भावनात्मक रूप से परिपक्व होना भी आवश्यक है। शिक्षक जितना भावनात्मक रूप से परिपक्व होगा, उसका शिक्षण कौशल उतना ही बेहतर होगा। इसलिए शिक्षण कौशल का भावनात्मक परिपक्वता से सीधा संबंध है।

मैकडूगल ने मुख्य रूप से 14 प्रकार की मानवीय भावनाओं (हिन्दी व्याकरण के अनुसार रस कह सकते हैं) का वर्णन किया है, जो मनुष्य द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में प्रदर्शित की जाती हैं। जहाँ तक परिपक्वता का सवाल है, यह अनुभव के आधार पर बढ़ती है और परिस्थितियों के अनुसार प्रदर्शित होती है। भावनात्मक परिपक्वता का अर्थ– ''भावनाओं को नियंत्रित करने और उन्हें सही वातावरण एवं सही परिस्थितियों में प्रदर्शित करने की प्रक्रिया से है।''

शोध की आवश्यकता और महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस कारण भी है जब विद्यार्थी स्नातक करने के पश्चात बी0एड0 या कोई उच्च व्यवसायिक पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने जाता है तो सबसे पहले उसमें सीखने की क्षमता एवं उस क्षेत्र में रुचि होना आवश्यकीय है। अपनी रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन करने के उपरांत प्रशिक्षणार्थी अपने प्रशिक्षण के दौरान अपने कौशल एवं योग्यता को बेहतर तरीके से व्यक्त कर सकते हैं तथा सफलतापूर्वक अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर सकते हैं।

प्रशिक्षण लेने के पश्चात बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं को विभिन्न सरकारी या गैर सरकारी (निजी) विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है। जहाँ शिक्षक का मूल्यांकन उसके शिक्षण कौशल के आधार पर किया जाता है तथा अध्यापक अपने अध्यापन कला के आधार पर ही विद्यार्थियों के बीच ख्याति प्राप्त करता है। इसके साथ ही साथ शिक्षक अध्यापन के साथ समाज का मार्गदर्शन भी करता है तथा विद्यार्थियों को जीवन में सफलता हेतु निर्देशन भी देता है।

अतः इन अहम् कार्यों हेतु शिक्षक का भावनात्मक रूप से परिपक्व होना भी आवश्यकीय है। यदि कोई शिक्षक परिपक्वता के आधार पर अपनी भावनाओं का सर्वश्रेष्ठ रूप से प्रदर्शन करता है तो विद्यार्थी उसका अनुकरण करके उस शिक्षक के जैसा बनना चाहते हैं अथवा उसे अपना आदर्श मान लेते हैं। तथा उसके द्वारा दी गयी शिक्षा, प्राप्त ज्ञान एवं निर्देशन को प्राप्त करके एक अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित होते हैं। यह देखा गया है कि अच्छी शिक्षण अभिक्षमता के साथ अध्यापक का भावनात्मक रूप से परिपक्व होना भी बहुत आवश्यकीय है, ताकि वह बच्चे को कुशल मार्गदर्शन और प्रशिक्षण दे सके।

इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वर्तमान में विभिन्न महाविद्यालयों में बी0 एड0 प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता में संबंधों का ज्ञान प्राप्त करना है। इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों को पाठ्यक्रम निर्माताओं, योजनाकारों, राजनेताओं और विद्वान समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके, ताकि शिक्षा प्रणाली को और बेहतर बनाया जा सके।

शोध समस्या

"बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन (कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल के विशेष संदर्भ में)"।

शोध के उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं –

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर–सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विज्ञान एवं कला संकाय के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. छात्र एवं छात्रा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

वर्तमान शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं तैयार की गई हैं –

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर–सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सरकारी एवं गैर–सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. विज्ञान एवं कला संकाय बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. विज्ञान और कला संकाय बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. छात्र एवं छात्रा बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. छात्र एवं छात्रा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

9. ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

साहित्य समीक्षा

शिक्षण–अभिक्षमता के शोध

कौर, हरमीत (2014) ने अपने शोध शीर्षक "कुरुक्षेत्र जिले के बी0एड0 (सामान्य) विद्यार्थी अध्यापकों की शिक्षण–अभिक्षमता का लिंग, स्थान, संकाय और व्यावसायिक अनुभव के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन" में निष्कर्ष निकाला कि –

1. लिंग और संकाय के संबंध में शिक्षण–अभिक्षमता में कोई अंतर नहीं है। दूसरे, संकाय योग्यता परीक्षण में उपलब्धि के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखाती है।
2. देश के सभी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी और उन्नति के प्रभुत्व के कारण स्थानीयता के संबंध में बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण अभिक्षमता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. शिक्षण , व्यवसाय का हिस्सा होने से योग्यता का स्तर उच्च होता है। कारण यह है कि हम जितना अधिक किसी विशेष क्षेत्र में अनुभव प्राप्त करते हैं, उतना ही हम उस क्षेत्र में अपने कौशल को बढ़ाते हैं।

अब्दुलनजर, पी0 टी0 (2018) ने 'सेवापूर्व छात्राध्यापकों में भावात्मक परिपक्वता और शिक्षण–अभिक्षमता' शीर्षक शोध में परिणाम पाया कि – शिक्षकों की भावात्मक परिपक्वता उनके शिक्षण प्रदर्शन में बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षण न केवल एक संज्ञानात्मक कार्य है, बल्कि एक उच्च स्तरीय भावनात्मक हस्तक्षेप भी है। अध्ययन ने यह भी देखा कि जिन शिक्षकों का अपने शिक्षण पर बेहतर भावनात्मक नियंत्रण होता है, वे शिक्षण में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

वर्मा, कामिनी (2020) ने 'माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण–अभिक्षमता के उनके शिक्षण–प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन' शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला है कि –

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी, छात्रा एवं छात्र, विज्ञान और कला संकाय शिक्षक प्रशिक्षुओं की शिक्षण–अभिक्षमता में सार्थक अंतर है। शहरी, महिला, विज्ञान संकाय शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता अधिक होती है।
2. माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण और शहरी, छात्रा एवं छात्र, विज्ञान एवं कला संकाय शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–प्रभावशीलता और शिक्षण–अभिक्षमता के बीच सार्थक संबंध है और दोनों चर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

गौतम, ज्योति और राठौर, अनामिका (2020) 'माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–दक्षता और भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन' शीर्षक पे शोध निष्कर्ष निकाला कि –

1. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–दक्षता शहरी क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षुओं की तुलना में कम पाई गई।
2. ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता शहरी क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षुओं की तुलना में कम पाई गई।
3. ग्रामीण क्षेत्रों की छात्रा एवं छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–दक्षता में अंतर पाया गया।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की छात्रा एवं छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक–परिपक्वता में अंतर पाया गया।
5. शहरी क्षेत्रों की छात्रा शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–दक्षता शहरी क्षेत्रों के छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की तुलना में अधिक पाई गई।
6. शहरी क्षेत्रों की छात्रा शिक्षक प्रशिक्षुओं की भावनात्मक–परिपक्वता शहरी क्षेत्रों के छात्र शिक्षक प्रशिक्षणार्थिओं की तुलना में कम पाई गई।

अब्दुल्ला, मुदासिर और अन्य (2022) ने 'प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता – एक तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि –

1. यह पाया गया कि प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षकों के दो समूह शिक्षण–अभिक्षमता और इसके आयामों पर काफी भिन्न हैं। इसका मतलब है कि प्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षकों में अप्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में बेहतर शिक्षण–अभिक्षमता है।
2. प्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षक शिक्षण पेशे में अधिक कुशल पाए गए, वे एक साथ काम करते हैं और स्कूल में अच्छा संगठनात्मक माहौल विकसित करने के लिए बहुआयामी कार्य करते हैं। प्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति जिम्मेदार हैं और अपने व्यवसाय से संतुष्ट हैं।

वेंकटेश, के0 और राजीव, ई0 (2024) ने 'शिक्षा महाविद्यालय के छात्र–शिक्षकों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ शिक्षण–अभिक्षमता के बीच संबंध' शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि –

1. 100 छात्र–शिक्षकों में से 24.7% में उच्च शिक्षण–अभिक्षमता है, 52% में मध्यम शिक्षण–अभिक्षमता है, और 23.3% में कम शिक्षण–अभिक्षमता है। इसका अर्थ है कि उच्च और निम्न स्तर की शिक्षण–अभिक्षमता वाले छात्राध्यापकों की तुलना में मध्यम स्तर की शिक्षण–अभिक्षमता वाले छात्राध्यापक अधिक हैं।
2. छात्राध्यापकों की शिक्षण–अभिक्षमता और शैक्षणिक–उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध है। इसका अर्थ है कि उच्च शिक्षण–अभिक्षमता वाले छात्राध्यापकों की शैक्षणिक–उपलब्धि भी उच्च होती है

भावनात्मक परिपक्वता के शोध

पेरुमल, पी0 और राजगुरु, एस0 (2015) ने अपने शोध जिसका शीर्षक "बी0एड0 छात्राध्यापकों की भावनात्मक परिपक्वता का एक अध्ययन", में निष्कर्ष निकाला कि –

1. छात्र एवं छात्रा बी0एड0 छात्राध्यापकों के भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है।
2. निष्कष पाया गया कि छात्र एवं छात्रा बी0एड0 छात्राध्यापकों के भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में उनके निवास क्षेत्र (ग्रामीण और शहरी) और एकल परिवार और संयुक्त परिवार के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

सुनीलिमा और कुमार, अरुण (2018) ने अपने शोध जिसका शीर्षक "कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के स्नातक छात्रों में भावनात्मक परिपक्वता का एक अध्ययन" है, में निष्कर्ष निकाला कि –

1. कामकाजी माताओं के स्नातक छात्रों में गैर–कामकाजी माताओं की तुलना में भावनात्मक परिपक्वता अधिक है।
2. कामकाजी माताओं के छात्रों की तुलना में कामकाजी माताओं के छात्रों में भावात्मक स्थिरता, भावात्मक प्रगति, सामाजिक–समायोजन, व्यक्तित्व एकीकरण और स्वतंत्रता के आयाम अधिक पाए गए।
3. भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के छात्रों में महत्वपूर्ण अंतर है।

आनंद, ए0 और अन्नादुरई, आर0 (2018) ने "बी.एड. प्रशिक्षुओं का सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता" शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि –

1. पुरुष और महिला बी0एड0 प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में एक महत्वपूर्ण अंतर है।

2. कला और विज्ञान बी0एड0 प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. पहले और दूसरे वर्ष के बी0एड0 प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में एक महत्वपूर्ण अंतर है।
4. तमिल माध्यम और अंग्रेजी माध्यम बी0एड0 प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में एक महत्वपूर्ण अंतर है। प्रशिक्षुओं में सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता में अंतर होता है।

मिश्रा, विभा और रिजवी, मोहम्मद आरिफ (2022) ने "बी0एड0 छात्र शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन" शीर्षक से अपने शोध में पाया कि –

1. बी0एड0 पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के औसत मूल्य में अंतर है, अर्थात बी0एड0 पुरुष प्रशिक्षु बी0 एड0 महिला प्रशिक्षुओं की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक अस्थिर हैं।
2. बी0एड0 पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं के मध्य उनके भावात्मक प्रतिगमन में सार्थक अंतर नहीं है। यह देखा गया कि बी0एड0 पुरुष प्रशिक्षु बी0एड0 महिला प्रशिक्षुओं की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक पिछड़े हैं।
3. बी0एड0 पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं के बीच उनके सामाजिक कुसमायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह देखा गया कि बी0एड0 पुरुष प्रशिक्षु महिला प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक सामाजिक रूप से कुसमायोजित हैं।

सिंह, महिमा और शर्मा, रूपाली (जून 2024) ने 'कॉलेज के छात्रों में बचपन का आघात, भावनात्मक परिपक्वता और जीवन संतुष्टि' शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि –

1. कॉलेज के छात्रों में बचपन के आघात और भावनात्मक परिपक्वता के बीच एक नकारात्मक संबंध को इंगित करता है। इससे पता चलता है कि जैसे–जैसे बचपन का आघात बढ़ता है, कॉलेज के छात्रों में भावनात्मक परिपक्वता कम होती जाती है।
2. कॉलेज के छात्रों के नमूने पर बचपन के आघात और जीवन संतुष्टि के बीच एक नकारात्मक संबंध को इंगित करता है। यह इंगित करता है कि जिन कॉलेज छात्रों ने बचपन में अधिक आघात का अनुभव किया है, उनमें जीवन संतुष्टि का स्तर कम है।
3. कॉलेज के छात्रों में भावनात्मक परिपक्वता और जीवन संतुष्टि के बीच एक

सकारात्मक संबंध को इंगित करता है। यह इंगित करता है कि कॉलेज के छात्र जो भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व हैं, उनमें जीवन संतुष्टि का स्तर अधिक है। सकारात्मक संबंध का मतलब है कि भावनात्मक परिपक्वता के उच्च स्तर वाले लोग अपने जीवन से अधिक संतुष्ट हैं।

जनसंख्या

वर्तमान शोध में कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से सम्बद्ध हल्द्वानी क्षेत्र के दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी बी0 एड0 महाविद्यालयों का चुनाव किया गया है, जिनमें बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की कुल जनसंख्या 400 है।

प्रतिदर्श

वर्तमान शोध में उपरोक्त जनसंख्या में से प्रतिदर्श के रूप में 100 बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं का चयन किया, जिसमें 50 सरकारी और 50 गैर–सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थी हैं, जो बी0एड0 के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत हैं।

शोध पद्धति

शोध के लिए सर्वेक्षण एवं विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध सांख्यिकी

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन और मानक स्केल टी – टेस्ट का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

वर्तमान अध्ययन में प्रतिदर्श से आंकड़े एकत्रित करने के लिए डॉ0 एस0सी0 गक्खड़ एवं डॉ0 रजनीश द्वारा तैयार शिक्षण–अभिक्षमता मापनी प्रश्नावली तथा डॉ0 यशवीर सिंह एवं डॉ0 महेश भार्गव द्वारा तैयार भावनात्मक–परिपक्वता मापनी प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सीमाऐं

1. वर्तमान शोध कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से सम्बद्ध हल्द्वानी क्षेत्र के महाविद्यालयों तक सीमित है।
2. वर्तमान शोध में केवल दो सरकारी और दो गैर सरकारी महाविद्यालयों का चुनाव किया गया।
3. शोध प्रतिदर्श के रूप में केवल 100 बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं का चयन किया गया, जिसमें 50 सरकारी तथा 50 गैर–सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थी हैं।

4. शोध को शिक्षण अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता चरों तक ही सीमित रखा गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

शिक्षण अभिक्षमता मापनी (टीएटी) और भावनात्मक परिपक्वता मापनी (ईएमएस)

तालिका संख्या : 1

चर	प्रतिदर्श प्रकार	कुल प्रतिदर्श (N)	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान	सार्थकता का स्तर (0.05 और 0.01)
टीएटी	सभी प्रशिक्षणार्थी	100	25.12	3.465	7.334	दोनों स्तरों पर सार्थक
ईएमएस	सभी प्रशिक्षणार्थी	100	191.4	17.262		
टीएटी	सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	24.88	3.572	0.691	दोनों स्तरों पर असार्थक
	गैर सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	25.36	3.373		
ईएमएस	सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	192.28	19.084	0.508	असार्थक
	गैर सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	190.52	15.369		
टीएटी	विज्ञान प्रशिक्षणार्थी	40	26.40	2.158	3.507	सार्थक
	कला प्रशिक्षणार्थी	60	24.27	3.901		
ईएमएस	विज्ञान प्रशिक्षणार्थी	40	191.88	18.566	0.218	असार्थक
	कला प्रशिक्षणार्थी	60	191.08	16.489		
टीएटी	छात्र प्रशिक्षणार्थी	35	25.80	3.123	1.512	असार्थक
	छात्रा प्रशिक्षणार्थी	65	24.75	3.606		
ईएमएस	छात्र प्रशिक्षणार्थी	35	196.31	16.549	2.108	सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक एवं 0.01 पर असार्थक
	छात्रा प्रशिक्षणार्थी	65	188.75	17.094		
टीएटी	ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी	38	24.58	3.818	1.1762	असार्थक
	शहरी प्रशिक्षणार्थी	62	25.45	3.217		
ईएमएस	ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी	38	190.50	14.930	0.429	असार्थक
	शहरी प्रशिक्षणार्थी	62	191.95	18.643		

परिणाम

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर देखा गया। (शून्य परिकल्पना अस्वीकृत)
2. सरकारी एवं गैर–सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)
3. सरकारी एवं गैर–सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)
4. विज्ञान एवं कला संकाय के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता के मध्य सार्थक अंतर है। (शून्य परिकल्पना अस्वीकृत)
5. विज्ञान एवं कला संकाय के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)
6. छात्र एवं छात्रा बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता के मध्य महत्वपूर्ण अंतर है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)
7. छात्र एवं छात्रा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर है। (शून्य परिकल्पना अस्वीकृत)
8. ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)
9. ग्रामीण एवं शहरी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)

निष्कर्ष एवं व्याख्या

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि –

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता का स्तर उनकी शिक्षण–अभिक्षमता से अधिक (उच्च) है।
2. सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता एवं भावनात्मक परिपक्वता का स्तर गैर सरकारी बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं के समान ही है, उनमें कोई अंतर नहीं देखा गया है।
3. परिणामस्वरूप विज्ञान वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता कला वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता से अधिक (उच्च) देखी गई।

लेकिन साथ ही, दोनों संकाय के प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता में समानता प्रदर्शित होती है।

4. छात्र एवं छात्रा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं दोनों की शिक्षण–अभिक्षमता में कोई अंतर नहीं देखा गया है, अर्थात दोनों की शिक्षण–अभिक्षमता समान है। लेकिन छात्र प्रशिक्षणार्थिओं की भावनात्मक परिपक्वता का स्तर छात्राओं की भावनात्मक परिपक्वता के स्तर से अधिक (उच्च) देखा गया है।

5. ग्रामीण तथा शहरी बी0 एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की शिक्षण–अभिक्षमता और भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में एकरूपता (समानता) देखी गयी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, एस0 पी0 और गुप्ता, अल्का (2017). उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान सिद्धांत और अभ्यास, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. गुप्ता, एस0 पी0 (2017). शोध परिचय, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. मंगल, एस0 के0 (2011). शैक्षिक मनोविज्ञान, नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
4. कौर, हरमीत (अगस्त 2014). "कुरुक्षेत्र जिले के बी0एड0 (सामान्य) छात्राध्यापकों की शिक्षण–अभिक्षमता का लिंग, स्थान, संकाय और व्यावसायिक अनुभव के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन", इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, खंडः 3, अंकः 8, आईएसएसएनः 2250–1991।
5. अब्दुन्नजर, पी0 टी0 (दिसंबर 2018). "सेवापूर्व छात्राध्यापकों में भावनात्मक परिपक्वता और शिक्षण–अभिक्षमता", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, खंड 8, अंक 12, आईएसएसएनः 2249–249, (http://www.ijmra.us)
6. वर्मा, कामिनी (2020). "माध्यमिक स्तर के छात्र शिक्षकों की शिक्षण–प्रभावशीलता पर भावात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण–अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन" शोध प्रबंध, कोटा : कोटा विश्वविद्यालय।
7. अब्दुल्ला, मुदासिर और अन्य (अप्रैल 2022). "प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित माध्यमिक–विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण–अभिक्षमता– एक तुलनात्मक अध्ययन", जर्नल ऑफ एजुकेशनः रवींद्रभारती विश्वविद्यालय आईएसएसएनः 0972–7175 खंडः XXIII, संख्याः 3, 2020– 2021।
8. वेंकटेश, के0 और राजीव, ई0 (2024). "शिक्षक–छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ शिक्षण–अभिक्षमता के बीच संबंध", वर्ल्ड जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड रिव्यूज़, 2024, 21(01), 2636–2639।
9. कुमार, अजय और शर्मा, गोपिका (मार्च 2022). "छात्राध्यापकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण उनके लिंग और संकाय के संबंध में", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोवेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, खंड 7, अंक 3, आईएसएसएनः 2456–4184, (www.ijnrd.org)
10. पेरुमल, पी0 और राजगुरु, एस0 (दिसंबर 2015). "बी.एड छात्र शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन", शांलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, खंड 4 नंबर 1 आईएसएसएनः 2320 – 2653, पृष्ठ 32–39।

11. सुनीलिमा और कुमार, अरुण (जुलाई 2018). "कामकाजी और गैर–कामकाजी माताओं के स्नातक छात्रों में भावनात्मक परिपक्वता का एक अध्ययन"। प्रतिध्वनि द इको पीयर रिव्यूड अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस आईएसएसएनः 2278–5264 (ऑनलाइन) 2321–9319 (प्रिंट) वॉल्यूम–टप्प्ए अंक–ट्, पृष्ठ संख्या 278–286 (http://www.thecho.in)

12. आनंद, ए0 और अन्नादुरई, आर0 (अप्रैल 2018). "बी0एड0 प्रशिक्षुओं का सामाजिक समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, वॉल्यूम 6, अंक 2, आईएसएसएनः 2320–2882, (www-ijcrt-org)

13. मिश्रा, विभा और रिज़वी, मो0 आरिफ (जून 2022). "बी0एड0 छात्रों और शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन", इनोवेशन द रिसर्च कॉन्सेप्ट, खंड– VII, अंक– टए आईएसएसएनः 2456–5474.

14. सिंह, महिमा और शर्मा, रूपाली (जून 2024). "कॉलेज के छात्रों में बचपन का आघात, भावनात्मक परिपक्वता और जीवन संतुष्टि", द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, आईएसएसएनः 2348–5396 (ऑनलाइन), आईएसएसएनः 2349–3429 (प्रिंट), खंड 12, अंक 2, अप्रैल–जून, 2024, (https://www.ijip.in)